بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-29.12.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

ओहद की लड़ाई में आप स. अकेले रह गए, इसमें यही भेद था कि आप स. की दलेरी लोगों पर प्रकट हो।(हज़रत मसीह मौऊद अलै.)

ओहद के युद्ध की परिस्थितियों एवं घटनाओं का वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 29 दिसम्बर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आज भी ओहद के युद्ध की कुछ अन्य घटनाएँ बयान करूँगा। जैसा कि वर्णन चल रहा था, एक छोटा सा रास्ता ख़ाली करने के कारण काफ़िरों ने पीछे से हमला किया तथा युद्ध की बिसाट उलट गई। दुशमन का हमला अत्यंत भयावह था। उस समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दृढ़ संकल्प, साहस एवं शौर्य के नमूने के बारे में लिखा है कि जब लड़ाई का पांसा पलटने के बाद सहाबा घबराहट में अपने आपको संभाल न सके और तितर बितर हो गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस आपाधापी तथा अपने चारों ओर दुशमनों के जमघटे के बावजूद अपने स्थान पर जमे रहे। सहाबा रज़ी. को घबराहट में इधर उधर भागते देख कर उन्हें पुकारते हुए फ़रमाते जाते थे कि ऐ फ़ुलाँ! मेरी तरफ़ आओ, मेरी ओर आओ, मैं ख़ुदा का रसूल हूँ, जबकि हर तरफ़ से आप स. पर तीरों की बोछार हो रही थी।

एक रिवायत में है कि आप स. बुलन्द आवाज़ में फ़रमा रहे थे कि-

اَنَا النَّبِیُّ لَا کَذِبۡ اَنَا ابۡنُ عَبۡدِ الۡمُطَّلِبۡ اَنَا ابۡنُ الۡعَوَاتِکۡ۔

मैं नबी हूँ इसमें झूठ नहीं, मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ, मैं अवातिक अर्थात आतिकाओं का बेटा हूँ।

साधारणतः यह है कि ये शब्द आप स. ने हुनैन के युद्ध में फ़रमाए थे परन्तु यह संभव है कि यही शब्द आप स. ने ओहद के युद्ध में भी फ़रमाए हों। अवातिक, आतिका का बहुवचन है तथा आतिका नाम को एक से अधिक महिलाएँ थीं जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नानियाँ और दादियाँ थीं।

इस घटना का विवरण बयान करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. में लिखा है कि जब अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ी. के साथियों ने देखा कि अब तो विजय हो चुकी है तो उन्होंने अपने अमीर अब्दुल्लाह रज़ी. से कहा कि हमको भी आज्ञा दें कि हम भी सेना के साथ शामिल हो जाएँ। अब्दुल्लाह ने उन्हें रोका, किन्तु ये लोग यह कहते हुए नीचे उतर गए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का केवल यह अभिप्रायः था कि जब तक पूर्णतः संतुष्टि न हो तो वह छोटा एवं सकरा रास्ता ख़ाली न छोड़ा जावे। ख़ालिद बिन वलीद ने दर्रे की तरफ़ मैदान साफ़ पाया जिस पर उसने अपने सवारों तथा इकरिमा बिन अबू जहल के दस्ते को लेकर अब्दुल्लाह बिन जुबैर तथा उनके कुछ साथियों को क्षण भर में शहीद करके इस्लामी सेना के पीछे से हमला कर दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो एक बुलन्द स्थान पर खड़े ये सब दश्य देख रहे थे, मुसलमानों का निरन्तर पुकारते रहे किन्तु इस हंगामे में आप स. की आवाज़ दब कर रह जाती थी।

मुसलमान इस अचानक हमले से घबरा गए, यहाँ तक कि इस आपाधापी में एक दूसरे पर वार करने लगे तथा अपने पराए में अन्तर न रहा। हुज़ैफ़ा रज़ी. के पिता जी जिनका नाम यमान था, ग़लती से शहीद कर दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाद में मुसलमानों की ओर से यमान की हत्या का बदला धन देकर चुकाना चाहा परन्तु हुज़ैफ़ा रज़ी. ने लेने से इंकार कर दिया और कहा कि मैं अपने बाप की हत्या मुसलमानों को माफ़ करता हूँ।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ी. सूरः नूर की आयत 64 की तफ़सीर में इसके विषय में फ़रमाते हैं कि जो लोग इस रसूल स. के आदेश का विरोध करते हैं उन्हें इस बात से डरना चाहिए कि कहीं उनको ख़ुदा तआला की ओर से कोई संकट न पहुंच जाए। अतएव देख लो कि ओहद की लड़ाई में इसी आदेश की अवहेलना के कारण इस्लाम की सेना को कितनी हानि उठानी पड़ी। काफ़िरों पर विजय के बाद एक अस्थाई पराज्य की चोट इस कारण से लगी कि कुछ आदमियों ने आप स. के एक आदेश की अवहेलना की थी और आप स. के निर्देश के विरुद्ध अपनो बुद्धि से काम लेना शुरु कर दिया था। यदि वे लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे उसी प्रकार चलते जिस प्रकार नाड़ी हृदय की गति के पीछे चलती है, यदि वे समझते कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञा पालन के फ़लस्वरूप यदि पूरी दुनिया को भी अपने प्राणों का बलिदान करना पड़ता है कि वह एक तुच्छ वस्तु है, यदि वे व्यक्तिगत बुद्धि से काम लेकर इस पहाड़ी सकरे रास्ते को न छोड़ते तो न दुशमन को दोबारा हमले का अवसर मिलता तथा न ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा को कोई कष्ट पहुंचता। अतः अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुमने आज्ञा पालन न किया तो हानि उठाई, यह इसका परिणाम था। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने सूरः कौसर की तफ़सीर में भी इस घटना को विस्तार से बयान फ़रमाया है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दृढ़ संकल्प के बारे में मिक़दाद बिन उमरू रज़ी. ने ओहद के दिन का वर्णन करते हुए बयान किया कि अल्लाह की क़सम, मुशरिकों ने वध किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अनेक घाव पहुंचाए, सुन लो उस ज़ात की क़सम जिसने आप स. को हक़ के साथ भेजा है, आप स. एक बालिश्त भी पीछे नहीं हटे तथा वे शत्रु के सामने डटे रहे। एक रिवायत में यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने स्थान पर जमे रहे तथा दुशमन से डट कर मुक़ाबला करते रहे तथा अपनी कमान से उन पर तीर बरसाते रहे यहाँ तक कि तीर समाप्त हो गए तो कमान क़तादा बिन नोमान ने ले ली तथा वह कमान सदैव उनके पास रही।

नाफ़े बिन जुबैर रज़ी. बयान करते हैं कि मैंने मुहाजिरों में से एक व्यक्ति को यह कहते हुए सुना कि ओहद में हर एक दिशा से तीर आ रहे हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके बीच में हैं, सारे तीर आप स. से दूर हो जाते थे। अब्दुल्लाह बिन शहाब ज़ोहरी ने कहा कि आप स. हमसे सुरक्षित कर दिए गए। अल्लाह की क़सम! हम चार लोग मक्का से निकले थे तथा उनकी हत्या करने का संकल्प एवं निश्चय किया परन्तु हम उन तक नहीं पहुंच सके।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बयान फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मक्की ज़िन्दगी एक अद्भुत नमूना है। एक दृष्टि से पूरा जीवन ही कष्टों में व्यतीत हुआ। ओहद की लड़ाई में आप स. अकेले ही थे, ऐसे दुशमनों में घिरे हुए थे, तब भी आप ने यह नहीं छिपाया कि मैं नहीं हूँ बल्कि इसका ऐलान कर दिया, पता लग गया लोगों को। ओहद के युद्ध में आप स. अकेले रह गए, इसमें यह भेद था कि आप स. का शौर्य लोगों पर प्रकट हो, जबकि आप स. दस हज़ार के मुक़ाबले में अकेले खड़े हो गए कि मैं अल्लाह तआला का रसूल हूँ। ऐसा नमूना दिखाने का किसी नबी को अवसर नहीं मिला।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि ओहद में तो तीन हज़ार की संख्या थी, क्यूँकि लिखने वाले ने लिखा है, हो सकता है कि आप स. ने दो युद्धों के बारे में फ़रमाया हो। अहज़ाब के युद्ध में दस हज़ार काफ़िर सेना थी तथा अन्य स्थानों पर भी दुशमनों की काफ़ी संख्या थी, तो इस प्रकार हज़रत मसीह माऊद अलैहिस्सलाम आप स. की बहादुरी और आप स. का नमूना साबित फ़रमा रहे हैं कि काफ़िरों के सामने भी आप स. अकेले खड़े हो गए।

फिर आप अलै. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला क़ादिर है कि जिस वस्तु में चाहे शक्ति भर दे। अतः अपने दर्शन वाली शक्ति उसने अपने कलाम में भर दी। नबियों ने इसी कलाम पर तो अपने प्राण लुटा दिए। क्या कोई सांसारिक प्रेमी इस तरह कर सकता ह? इस कलाम एवं सम्बोधन के कारण कोई नबी इस मैदान में क़दम रख कर फिर पीछे नहीं हटा तथा न ही कोई नबी विश्वासघाती हुआ, अर्थात जो दावा किया है, दावे पर क़ायम रहते हैं।

ओहद के युद्ध की घटना के बारे में लोगों ने विवेचनाएँ की हैं किन्तु असल बात यह है कि ख़ुदा की उस समय प्रतापी उर्जा थी और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त किसी और में सहन करने की शक्ति नहीं थी, इस लिए आप स. वहाँ पर ही खड़े रहे तथ शेष सहाबियों के क़दम उखड़ गए।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन में जैसे इस सत्य एवं निष्ठा का उदाहरण नहीं मिलता जो आप स. को ख़ुदा से था, ऐसा ही उन इलाही समर्थनों का भी उदाहरण नहीं मिलता जो आप स. को प्रदान हुए थे।

हुज़ूरे अनवर ने ख़ुत्बः के अन्त में कुछ मृतकों का सद्वर्णन फ़रमाया-

सबसे पहले एक पुराने ख़ादिम एवं सिलसिले के मुबल्लिग़ मुकर्रम डा. जलाल शम्स साहब इन्चार्ज टर्किश डैस्क के देहान्त पर उनका सद्वर्णन करते हुए फ़रमाया कि इनका जनाज़ा कल पढ़ा दिया था, आज इनके बारे में कुछ वर्णन करना चाहता हूँ। यह योग्य, प्रतिभा शाली, सरल स्वभाव एवं आज्ञा पालन करने वाले वाक़िफ़े ज़िन्दगी थे। जर्मनी तथा बर्तानिया में आपको सेवाएँ करने का अवसर मिला। 2002 में तुर्की में आपको दो साथियों के साथ तबलीग़ के अपराध में साढ़े चार महीने की जेल का भी सौभाग्य मिला।

हुज़ूरे अनवर ने अन्य तीन मृतकों का सद्वर्णन फ़रमाया तथा उनके जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई। इनमें मुकर्रम मुहम्मद इबराहीम भाम्बड़ी साहब का वर्णन फ़रमाया कि उन्होंने 106 वर्ष की आयु पाई, बड़ा प्यार एवं स्नेह करने वाले थे, मैं भी उनका विद्यार्थी रहा हूँ। उनकी कठोरता में सहानुभूति एवं सुधार की धारणा होती थी।

फिर घाना के युसुफ़ अजारे साहब का वर्णन फ़रमाया कि बड़े निष्ठावान अहमदी दोस्त थे। विभिन्न जमाअती ओहदों पर नियुक्त रहे तथा सेवा का सुअवसर मिला।

फिर अलहाज उसमान बिन आदम साहब का सद्वर्णन फ़रमाया, मरहूम वसीय्यत के निज़ाम से जुड़े हुए थे तथा अत्यंत निष्ठावान अहमदी थे, हज का सौभाग्य भी मिला तथा क़ुर्आन करोम के फ़ान्टो भाषा के अनुवाद में भी इनको बड़ी भूमिका है।

हुज़ूरे अनवर ने मरहूमीन को मग़फ़िरत की दुआ देते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआला इनकी संतानों को भी इनके पदचिन्हों पर चलने का सामर्थ्य प्रदान करे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131